सं. श्रो.वि/रोहतक/121-83/60376.--चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज बी.के. एड कं०, ।फंत एच.एन.जी. एंड इन्डस्ट्रीज लि०, बहादुरगढ़ (रोहतक) के श्रमिक श्री राम पत तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें सके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोद्योगिक विवाद हैं ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

क्या श्री राम पत की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक <mark>है ? यदि न</mark>हीं, तो वह किस <mark>राहत का</mark> हकदार है ?

## दिनांक 23 नवम्बर, 1983

सं.स्रो.वि./फरीदावाद/155-83/2/61595.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय **है कि मै० रमीं**गटन **रैंड** श्राफ इण्डिया, सैक्टर-6, फरीदांबाद, के श्रमिक श्री शिव स्रवतार तथा उसके प्रबंधकों के बीच इसमें **इसके बाद लिखित मामले में कोई** स्रौद्योगिक विवाद है**;** 

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद श्रष्टिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (भ) द्वारा प्रवान की गई क्लियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रीधिनियम की धारा 7-क के स्थीन ग्रौद्योगिक ग्रीधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिदिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बधिन्त मामले, श्रीमक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं ;—

क्या श्री शिव मवतार की सेवाझों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांकनीर्य समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6-11-1970 के साथ पठित सरकारी ग्रिधिसूचना सं 3864-ए.ए स.ग्रो. (ई)श्रम/70/13648, दिनांक 8-5-70 हारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच था तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा संबंधित

क्या श्री जय पाल सिंह की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो.वि./फरीदाबाद/162-83/61609.—चूं कि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज मैक्टौल इण्डस्ट्रीज, सैक्टर-6, प्लांट नं० 115, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री मदन लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

भौर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इस लिए ग्रब ग्रीदोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7-क के ग्रिधीन ग्रीद्योगिक ब्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यार्थानर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं :---

क्या श्री मदन लाल की सेवाझों का समापन न्यायौचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राह्रत का हकदार है ?

सं० म्रो. वि./फरीदाबाद/162-83/61616.—चूं कि राज्यपाल, हरियाणां की राय है कि मैसर्ज माटो एनसलरीज प्लाट नं० 15, सैक्टर-6, फरीदाबाद, के श्रीमा श्री राम म्राजा यादव तथा उनके प्रवश्वकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मानले के सम्बन्ध में कोई भौधोगिक विवाद है;

मौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, भव, भौद्योगिक विवाद मिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रवान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त प्रधिनियम की खारा 7-क के द्मधीन श्रीद्योगिक श्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

नया श्री राम श्राज्ञा यादव की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं श्रो वि /करनाल / 24-83 / 61 62 3. — चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज करनाल टाईमस प्रिटिंग पब्लिशिंग प्रोडक्शन कोपरेटिव इण्डस्ट्रीयल सोसाईटी लि॰, करनाल, के श्रीमक श्री जसवन्त राय तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीखोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई मिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7क के अधीन श्रौद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री जसवन्त राय की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. श्रो.वि./करनाल/24-83/61629.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज दी करनाल टाईम्स प्रिटिंग एण्ड पब्लिशिग प्रोडक्शन कोपरेटिव इण्डस्ट्रीयल सोसाईटी लि०, करनाल, के श्रीमिक श्री दीन दयाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रीधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्राधिनियम की धारा 7क के श्रधीन श्रौद्योगिक श्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णम के लिए निर्दिष्ट करते हैं:——

क्या श्री दीन दयाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./पानीपत/24-83/61635. चूंकि राज्यपाल हरियाणा की राय है कि मैसर्ज करनाल टाईम्स प्रिटिंग एण्ड पब्लिशिंग प्रोडक्शन कोपरेटिव इन्डस्ट्रीयल सोसाईटी लि० करनाल, के श्रमिक श्री बहादुर चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रौग्रोगिक विवाद है;

भौर जूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, प्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 को उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई मक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7क के ग्रेक्षोन ग्रीद्योगिक भ्रधिकरण, हरियाणा, फरोदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री बहादुर चन्द की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. स्रो.वि./यमुना/197-83/61641.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज नगरपालिका, जगाधरी के श्रमिक श्री प्रेम पाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले **के सम्बन्ध में कोई ग्रौद्योगिक विवाद** है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री प्रम पाल की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

ं सं. ग्रो.वि./फरीदाबाद/157-83/61647.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज प्रधान गेडोर इम्पलाईज कन्जूमर स्टोर लि॰, 1-2,एन ग्राई.टी. फरीदाबाद, के श्रमिक श्री दयानन्द चतुर्वेदी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है ;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक दिवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों की प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7क के ग्रिधीन ग्रौद्योगिक ग्रिधि-करण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे निर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री दयानन्द चतुर्वेदी की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

स. ग्रो. वि./एफ.डी./2/84-83/61654.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. ग्रमन स्केल्स प्रा०लि०, 14-ए, एन.ग्राई.टी., फरीदाबाद, के श्रमिक श्री किशन गिरी तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए अब ग्रीहोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई अविन्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-के के अधीन श्रीहोगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदावाद को नीचे निर्दिष्ट विवादग्रस्त या इससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री किशन गिरी की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो.वि./एफ.डी./283-83/61661. — चुंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज ग्रमन स्केल्स प्रा०लि०, 14-ए, एन.आई.टी., फरीदावाद, के श्रमिक श्री नसरु दीन तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इस के बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतृ निर्विष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, मन, भौद्योगिक विवाद भविनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई

द्मोद्योगिक ग्रक्षिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा श्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या क्री नसरु दीन की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

स. ग्रो.वि-|सोनीपत/16-82/61674---चूंकि राज्यगल, हरियाणा की राय है कि कार्यकारी ग्रिभियन्ता श्रोपरेशन, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, सोनीपत, के श्रमिक श्री धर्म पाल तया उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझतं हैं;

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 9641—1—श्रम—70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं 3864—ए. एस. श्रो. (ई) श्रम—70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम म्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तौ विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री धर्मपाल को सेवाभ्रों का तमारत न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./सोनीपत/149-83/61688.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि प्रशासक; नगरपालिका, खरखोद। (सोनीपत) के श्रमिक श्री रधवोर सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनयम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 9641 · 1 ·श्र म – 70/32573, दिनांक 6–11–1970 के साथ पठित सरकारी ग्रधिसूचना सं. 3864–ए.एस.ग्रो.(ई) श्रम–70/13648, दिनांक, 8–5–70 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की घारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायलय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबन्धित मामला है:—

क्या श्री रघबीर सिंह की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं ग्रो.वि./सोनीपत/149-83/61695.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि प्रशासक, नगर पालिका, खरखोदा, (सोबीपत) के श्रमिक श्री जय नारायण तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, श्रीद्योगिक विवाद ग्रिवित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारा अधिसूचना सं० 9641-1-श्रन-70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं० 3864-ए.एस.ग्रो (ई)श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिधित्यम की धारा 7 के अधीन गठिल श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय हेतु निविद्य करते हैं जो कि उक्त प्रचन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:

क्या श्री जय नारायण की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?